RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल. 0011/2012-14

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 70 अंक: 12
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–70, अंक : 12, 20/23 जून 2013 तदनुसार 10 आषाढ़ सम्वत् 2070 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

ऋग्वेद में अग्नि (ताप) विद्या

ले० डा. शिवनारायण उपाध्याय 73 शास्त्री नगर, दादाबाड़ी कोटा। (राजस्थान)

सृष्टि के उद्भव एवं विकास में अग्नि का विशेष महत्व है। सृष्टि की उत्पत्ति ही महान् विस्फोट से प्रारम्भ होती है। सृष्टि में होने वाले अधिकांश रासायनिक एवं प्राकृतिक परिवर्तनों में अग्नि का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। अग्नि से प्राप्त ताप की भिन्नता के कारण ही वायु में बहाव बना रहता है। अग्नि से प्राप्त ऊर्जा से भाप के द्वारा नाना प्रकार के वाहन कार्य करते हैं। बाड़वाग्नि द्वारा पानी में रहने वाले जीव जन्तु तथा नाना प्रकार की वनस्पति अपने विकास तथा जीवित रहने के लिए आवश्यक ताप प्राप्त करते हैं। आज कल तो सूर्य के द्वारा दिये गए ताप से विद्युत भी उत्पन्न की जा रही है। ऋग्वेद में अग्नि के महत्व को बताने के लिए कई ऋचाएं उपलब्ध हैं। अब हम ऋग्वेद के आधार पर ही अग्नि (ताप) के विषय में चर्चा करते हैं–

केतुं यज्ञानां विदथस्य साधनं विप्रासो अग्निं महयन्त चित्तिभिः।
अणांसि यस्मिन्नधि सन्दधुर्गिरः तस्मिन्सुम्नानि यजमान आ चके।

ऋ. 3.3.3

अर्थ–(विप्रासः) विद्वान् मेधावीजन् (यस्मिन्) जिस अग्नि में (गिरः) वाणी और (अपांसि) कर्मों को (चित्तिभिः) काष्ठ आदि के इकट्ठे समूह से (अग्निम्) अग्नि के समान (अधि सन्दधुः) अच्छे प्रकार धारण करें अथवा जिस से (यज्ञानाम्) मिले हुए व्यवहारों का (केतुम्) उत्तमता से ज्ञान दिलाने और (विदथस्य) दूसरे के लिए विज्ञान के (साधनम्) सिद्ध कराने वाले का (महयन्त) सत्कार करें अथवा (सुम्नानि) सुखों को अच्छे प्रकार धारण करें अथवा जिसमें (यजमानः) विद्वानों की सेवा और सङ्गति का करने वाला जन (सुम्नानि) सुखों की अच्छी प्रकार कामना करता है (तस्मिन्) उसमें सब मनुष्य सुखों का अच्छे प्रकार धारण करें।

भावार्थ–इस मन्त्र में वाचक लुप्तोपमालङ्कार है। समस्त पदार्थ विद्या के बीच अग्नि के तुल्य कोई और पदार्थ कार्य साधक नहीं है। इससे इस अग्नि का ही परिज्ञान उत्तम यत्न के साथ सब लोगों को करना चाहिए। अग्नि संसार के सभी पदार्थों में व्याप्त है। इस पर वेद का कथन है–

पिता यज्ञानामसुरो विपश्चितां विमानमग्निर्वयुनं च वाघताम्।
आविवेश रोदसी भूरीवर्पसा पुरूप्रियो भन्दते धामभिः कविः।

ऋ . 3.3.4.

अर्थ–हे मनुष्यों। जैसे ईश्वर (यज्ञानाम्) प्राप्त हुए व्यवहारों का (पिता) पालने वाला (असुरः) समस्त भूगोल आदि पदार्थों का यथाक्रम अर्थात् यथास्थान फेंकने वाला (विपश्चिताम्) विद्वानों के लिए (विमानम्) विमान के समान (वाधताम् च) और मेधावी जनों का (वयुनम्) उत्तम ज्ञान (भूरीवर्पसा) बहुत पराक्रम के (धामभिः) स्थानों के साथ (पुरूप्रियः) बहुतों को तृप्त करने वाला (कविः) विशेष क्रम से जिसका दर्शन होता वह (भन्दते) प्रसन्न करता है और (रोदसी) आकाश और पृथ्वी को (आ विवेश) प्रविष्ट हुआ है वैसे (अग्निः) अग्नि भी तुम लोगों को जानने योग्य है।

भावार्थ–जैसे ईश्वर सर्वत्र व्याप्त होकर सबकी व्यवस्था करता है वैसे ही अग्नि पृथ्वी आदिकों को अभिव्याप्त होकर आकर्षण से सब पदार्थों की व्यवस्था करता है। जैसे अग्नि अच्छे प्रकार युक्त किये हुए विमान को आकाश में शीघ्र चलाता है वैसे सिद्धांतों की सेवापूर्वक योगाभ्यास के विज्ञान से सेवा किया हुआ जगदीश्वर चिदाकाश से युक्त जनों को शीघ्र प्रवेश कर विहार करता है।

पदार्थ विद्या में तो अग्नि का अत्याधिक महत्व है। किसी भी पदार्थ का जलना प्रारम्भ होने का तापक्रम, पिघलने का तापक्रम, जमने का तापक्रम उबलने का तापक्रम वाष्पीकरण का तापक्रम आदि ताप (अग्नि) पर ही निर्भर है। अग्नि के अभाव में पदार्थ के गुणों की परीक्षा नहीं की जा सकती है। इसलिए विज्ञान में सर्वप्रथम ताप का ही अध्ययन कराया जाता है।

चन्द्रमग्निं चन्द्ररथं हरिव्रतं वैश्वानरमप्सुषदं स्वर्विदम्।
विगाहन्तूर्णिं तविषीभिरावृतं भूर्णिन्देवास इह सुश्रियन्दधुः।

ऋ . 3.3.5

अर्थ–हे मनुष्यों। जैसे (देवासः) विद्वान्जन (इह) इस संसार के बीच (चन्द्ररथम्) जिसके चन्द्रमा के समान रथ बनता है, (हरिव्रतम्) वा जिसके घोड़े शीलरूप (अप्सुसदम्) अथवा प्राण और जाला में स्थित होता (स्वर्विदम्) अथवा जिससे जीव सुख को प्राप्त होता (विगाहम्) अथवा जिस के निमित्त से विविध प्रकार के पदार्थों को विलोड़ता अथवा (तूर्णिम्) जो शीघ्र गमन करने वाला (तविषीभिः) बलादि गुणों के साथ (आवृतम्) संयुक्त (भूर्णिम्) और पदार्थों का धारण करने वाला (सुश्रियम्) जिससे उत्तम लक्ष्मी उत्पन्न होती अथवा (वैश्वानरम्) समस्त प्राप्त पदार्थों में व्याप्त (चन्द्रम्) आनन्द करने वाला निरन्तर प्रकाशमान (अग्निम्) अग्नि को (दधुः) धारण करें वैसे इसको तुम भी धारण करो।

भावार्थ–इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालंकार है। जब तक पदार्थ विद्या में अग्नि विद्या न हो तब तक आभूषण रहित स्त्री के समान नहीं शोभावमान होती है। अग्नि ऊर्जा के रूप में एटम के अन्दर भी विद्यमान है।

अग्निर्देवेभिर्मनुषश्च जन्तुभिस्तन्वानो यज्ञं पुरूपेशसं धिया।
रथीरन्तरीयते साधदिष्टिभिर्जी रो दमूना अभिशस्तिचातनः।

ऋ . 3.3.6.

(शेष पृष्ठ 6 पर)

द्यूत-क्रीड़ा से गृहस्थ का सर्वनाश, ऋग्वेद में एक जुआरी की आत्मकथा, जुआरी की दुर्दशा एवं ईश्वर-कृपा से उसका उद्धार

-ले० श्रीमती मृदुला अग्रवाल, 16 सी, सरत बोस रोड, कोलकाता

गृहस्थ मनुष्य जीवन का सर्वोत्तम आश्रम है। इसे परमधर्म भी कहा गया है। गृहस्थ निष्कंटक हो, ऋत हो, सत्यमय हो, सुखमय हो, आनन्ददायक हो, मधुमय एवं पवित्र हो, प्रत्येक विवाह समय में यही कामना की जाती है। यहां पति-पत्नी वैदिक संस्कृति के अनुसार अपने-अपने कर्त्तव्यों का अनुसरण करते हुए दाम्पत्य जीवन में नियमबद्ध रहें तो गृहाश्रम आनन्दमय रहेगा। व्यभिचार और काम की व्यथा से रहित होकर धर्मानुकूल सन्तानों को उत्पन्न करके उत्तम शिक्षा से प्रशस्त कर सकें यही पति-पत्नी दोनों के लिए प्रभु का आशीर्वाद होगा। स्त्री-पुरुष दोनों में से अगर एक भी कुमार्ग की ओर प्रवृत्त हो जाए तो उस गृहस्थ का सर्वनाश होना अवश्यम्भावी है।

ऋग्वेद में एक गृहस्थ में धनवान् पति जुए की लत के प्रति अनुरक्त हो जाता है। जुए के 'पासे' उसे अपनी ओर आसक्त करते रहते हैं और वह उन पासों की ओर आकर्षित होता हुआ खींचा चला जाता है। उसकी माता एवं पत्नी बहुत दु:खी रहती हैं। जैसे-महाभारत में पाण्डव-पुत्र युधिष्ठिर को भी 'द्यूत-क्रीड़ा' शीघ्र ही आकर्षित कर लेती थी जिसकी वजह से द्रौपदी का चीर-हरण जैसी भयोत्पादक दुर्घटना का होना, बाकी भाईयों का भी शर्मनाक समय से गुजरना, बार-बार अपने राज्य को भी हार जाना, न जाने कितने प्रकार से सुखमय गृहस्थ की दुर्दशा हुई, कारण ? ''सिर्फ और सिर्फ जुए के पासों का आकर्षण।''

ऋग्वेद, मंडल-10, सूक्त-34, मन्त्र-1 में इसी तरह वह धनवान् पति कहता है कि मुझे जुए के पासे हर्षित करते हैं। यह बहेड़े के वृक्ष से उत्पन्न जुए का गोटा, मुञ्जवान पर्वत पर उत्पन्न सोम ओषधि के भक्षण की भांति रस के समान आस्वादन योग्य द्यूत क्रीडन स्थान में होता है। जीता-जागता मानो मुझे फुसलाता है। जुआ आदि कृत्रिम साधन मुझ लोभी पर छाए हैं। मुझे जुआ खेलने के लिए जागृत करते हैं, ऐसा मैं समझता हूं।

मेरी पत्नी सुलक्षणा स्त्री है। मुझे दु:ख नहीं पहुंचाती, मेरा अनादर भी नहीं करती है। मेरे मित्रों और मेरे लिए सुखकारिणी है, तो भी मुझे खेद है कि एकमात्र अक्ष अर्थात् जुए के कारण पतिव्रता स्त्री को भी मैं रख नहीं सकता, उसे भी हार देता हूं। स्वयं से पृथक् कर बैठता हूं।

-ऋग्वेद, मंडल-10, सूक्त-34, मन्त्र-2

जुए में सर्वस्व खोने वाले जुआरी से उसकी सास भी द्वेष करती है। मेरी सास मुझसे घृणा करती है। पत्नी भी मुझे नहीं चाहती है। दु:खित होने पर किसी को भी अपने पर कृपालु नहीं पाता हूं और मांगने पर भी मुझे किसी से धन नहीं मिलता है। बूढ़े घोड़े के तुल्य एवं पुराने वस्त्र के समान मैं भी जुआरी जैसा किसी से भी सुख व रक्षा नहीं कर पाता हूं और उचित भोगों से भी वंचित रहता हूं।

-ऋग्वेद, मंडल-10 सूक्त 34, मन्त्र-3

जुआरी की दुर्दशा। जिसकी सम्पदा पर बलवान् जुए की लत ललचा जाती है, उसकी पत्नी को भी दूसरे लोग हथिया लेते हैं। पिता, माता, भ्राता भी उसे लक्ष्य कर कहते हैं कि हम इसे नहीं जानते कि यह कौन है ? इसे बांध कर ले जाना है तो ले जाओ।

-ऋग्वेद, मंडल-10, सूक्त-34, मन्त्र-4

मैं व्यसनी जब संकल्प करता हूं, उनकी चिन्ता करता हूं कि अब इन पासों से नहीं खेलूंगा, किन्तु दूर से आने वाले सखा तुल्य जुआरियों से दब जाता हूं। वे लाल-पीले रंग के फेके जाकर मानो कहते हैं और मैं भी जुए के स्थान पर व्यभिचारिणी नारी के समान चला जाता हूं।

-ऋग्वेद, मंडल-10, सूक्त-34, मन्त्र-5

मैं जुआरी शरीर से आवेश के वशीभूत होकर पुन: जीतने की अभिलाषा मन में संजोकर जुआरियों की मंडली में जाता हूं और समझता हूं कि 'मैं अब जीतूंगा।' मेरी यह भावना रहती है कि जुए के ये पासे ही मुझे प्रतिपक्षी पर विजय प्रदान कराएंगे। मुझे द्यूत-व्यसनी के वे अक्ष मुझमें धन-अभिलाषा की वृद्धि करते हैं।

-ऋग्वेद, मंडल-10, सूक्त-34, मन्त्र-6

जुए में जो व्यक्ति जीतता है, उनके लिए भी जुए के पासे अन्तत: पीड़ा देने वाले ही सिद्ध होते हैं। वे मधुर स्वाद वाले विषाक्त अन्न के समान हैं। जुए के पासों के समूह का प्रभाव भी सूर्य के समान चतुर्दिक् फैलता है। ये पासे भयंकर क्रोध के समक्ष भी नहीं झुकते। राजा तक भी इनके वशीभूत हो जाते हैं। वे पासे जुआरी को चाहे जिताएं अथवा हराएं, दोनों स्थितियों में जुआरी के हृदय में अंगारे जलाए रखते हैं। अतएव इनसे सदैव दूर रहना ही सर्वोत्तम है। मुझ उच्छृंखल द्यूतव्यसनी पुरुष की स्त्री भी मुझसे दु:खित होती है। मेरी माता भी अपने इधर-उधर विचरते व्यसनी पुत्र से दु:खी रहती है। क्योंकि मैं जुआरी ऋण-ग्रस्त हो जाने पर और अधिक धन को चाहता हूं। इसलिए मेरी इतनी दुर्दशा होती है कि मैं दूसरों के घर में चोरी भी करने लगता हूं।

-ऋग्वेद, मंडल-10, सूक्त-34, मन्त्र-10

जब तक अति नहीं होती तब तक परिवर्तन भी नहीं होता है। अब शनै: शनै: ईश्वर कृपा का दीपक जलने लगा। जुआरी के शुभ दिन सामने आते हैं। अन्यों के यहां छीन-झण्ट व चोरी करने वाला जुआरी दु:खी पत्नी को देखकर दु:खित होने लगता है। अपनी दरिद्रता का अनुभव करने लगता है। औरों की स्त्री तथा उनके सुकर्म एवं उत्तम रीति से बने घरों को और उनकी सम्पन्नता को देखकर पश्चाताप की अग्नि में झुलसने लगता है। उसे स्वयं पर क्रोध आने लगता है। रात्रि के उपरान्त प्रात: सावधान होकर अपने उद्धार के लिए भगवान से प्रार्थना करते हैं।

इस समय जुआरी को अपने दुर्व्यसन से पूर्ण ग्लानि होने लगी और वह जुए से मुंह मोड़ने लगा। जुआरियों के मुखिया के समक्ष जुआ खेलने को छोड़ने के संकल्प को घोषित कर देता है। इसके कारण उसके पुराने साथी उससे द्वेष करने लगते हैं, परन्तु जुआरी को अपनी दुर्दशा को दिखाते हुए उन्हें भी समझना चाहिए जिससे वे भी जुए की लत से बच सके एवं अपने गृहस्थ जीवन को सुधार लें।

प्रभु का उपासक उसे समझाता है कि जुए में आसक्त मानव! तू जुए के पासों से मत खेल, प्रत्युत तू कृषि किया कर। परिश्रम की कमाई से जो धन एवं अन्न प्राप्त होगा उसका आनन्द ही अलग है। यही श्रेष्ठ है। ऐसा करने से पारिवारिक व्यवस्था सुधर सकती है, गृहस्थाश्रम में सुख प्राप्त होता है। ईश्वर भी अनुकूल होता है। ईश्वर-कृपा से अपना उद्धार पाकर प्रभु-भक्ति में लीन होने का अवसर मिलता है।

वासनाएं व दुर्व्यसन, चाहे जुआरी को जुआ खेलने के हों या पर स्त्री के समागम के, दूसरे के धन की चोरी हो या हिंसा ही, सब के सब मानव जीवन को उसके गृहस्थ के सुख को उसी प्रकार खोखला कर देते हैं, जैसे चूहा अन्न को खाकर भण्डार खाली कर देता है। इनसे बचने के लिए एकमात्र उपाय परमात्मा की शरण ग्रहण करना ही है, वही उसे मोक्ष प्रदान करता है।

सम्पादकीय.....

बड़े गौर से सुन रहा था जमाना, हम ही सो गए दास्तां कहते-कहते

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम चरण में आर्य समाज सदृश क्रांन्तिकारी आन्दोलन का प्रादुर्भाव एक ऐतिहासिक घटना थी। सदियों से सोये राष्ट्र की आत्मा को जिस युगपुरूष ने झकझोर कर जगाया, वह था युगनिर्माता महर्षि दयानन्द सरस्वती। जिस समय भारत का यह महान सन्यासी कर्मक्षेत्र में कमर कस कर उतरा वह भारतीय इतिहास की पतनावस्था का कलंकित समय था। सारी धरती पर चक्रवर्ती शासन करने वाले आर्य विदेशियों से पदाक्रान्त थे। भारतभूमि पर क्रन्दन हो रहा था। विधवाएं एवं अनाथ बच्चे चीत्कार कर रहे थे, साक्षात दानवता का तांडव नर्तन हो रहा था, गुलामी की जंजीरों में जकड़ी भारत माता कराह रही थी। वेद ज्ञान की पावन शिक्षा देने वाला आर्यावर्त अज्ञानान्धकार में डूबा हुआ था। अन्धविश्वासों एवं पाखण्डों ने समाजिक एवं धार्मिक दशा अत्यन्त शोचनीय बना दी थी। समाज में जाति- पाति छुआछूत का बोलबाला था। वर्णाश्रम व्यवस्था क्षत-विक्षत हो चुकी थी।

राष्ट्र की इसी भयावह वेला में युग प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने युग की प्रबल धारा को मोड़ने का संकल्प लिया और वेदों द्वारा राष्ट्र के अभ्युदय के लिए अपना तन-मन-धन समर्पित कर अन्त में अपना प्राण सुमन भी अर्पित कर दिया। मानवता की साक्षात् मूर्ति सा दयानन्द सरस्वती अकेला अनेकानेक संघर्षों से जूझता रहा, लेकिन तूफानों से लड़ने वाले इस अपराजेय योद्धा ने कभी हार नहीं मानी। अपनी विलक्षण प्रतिभा, अकाट्य तर्कशक्ति, भव्य व्यक्तित्व, अनुपम निष्ठा तथा उदात्त विद्वत्ता के बल पर स्वामी जी ने लगभग सारे भारत का परिभ्रमण कर वेदों का प्रचार प्रसार किया। स्वामी जी ने सोते हुए देश को जगाया तथा सारे भारत में क्रान्तिकारी राजनीतिक, धार्मिक व सामाजिक पुनर्जागरण किया जिससे सारा राष्ट्र अंगड़ाईयां लेकर उठ बैठा, और भारतीय समाज पर छाऐ हुए अज्ञानांधकार का पर्दा उठ गया।

नई चेतना, नए साहस, नवस्फूर्ति तथा नव शक्ति से विभूषित होकर हमने विदेशी शासक से लोहा लेने का निर्णय किया। वेद प्रचार, समाज सुधार, मानवता उत्थान तथा समस्त संसार के कल्याण के लिए महर्षि दयानन्द ने सन् 1875 में आर्य समाज जैसी क्रान्तिकारी संस्था की स्थापना की। नि:संदेह आर्य समाज ने अपने कार्यक्रमों का कार्यान्वयन करके भारत के इतिहास में स्वर्णिम पृष्ठों का सृजन किया। आर्य समाज के दस नियमों में उन्होंने स्पष्ट किया कि संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, किसी वर्ग विशेष समुदाय के कल्याण की भावना का उद्देश्य न लेकर, संसार के कल्याण की भावना को अपना लक्ष्य माना और इसी लक्ष्य को लेकर आर्य समाज ने कार्य करना आरम्भ कर दिया। भारत की स्वाधीनता के महान आन्दोलन में आर्य समाज ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आर्य समाज के सैकड़ों सैनिकों ने भारत माता की बलिवेदी पर अपने पुष्प अर्पित किए। श्याम जी कृष्ण वर्मा, लाला लाज पतराय, स्वामी श्रद्धानन्द, भाई परमानन्द, सरदार भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, रोशन सिंह, गेंदा लाल दीक्षित और सावरकर आदि क्रान्तिकारी अमर सपूतों ने आर्य समाज के प्रांगण में ही राष्ट्र भक्ति एवं शहीद होने की प्रेरणा प्राप्त की थी। समाज सुधार के क्षेत्र में, शिक्षा के क्षेत्र में, धार्मिक पुनर्जागरण के क्षेत्र में, नारियों के उत्थान के क्षेत्र में, वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में, राष्ट्र भाषा के उत्थान के क्षेत्र में भी आर्य समाज ने अविस्मरणीय योगदान दिया। परिणामस्वरूप राष्ट्र के कण-कण में नवस्फूर्ति का संचार हुआ, अपने संस्थापक यशस्वी स्वामी दयानन्द के कार्यों तथा उनके मार्ग का विस्तार करते हुए आर्य समाज ने हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक वेदों के प्रचार का कार्य अपने हाथों में लेकर वैदिक धर्म की दूंदुभि बजाई। भारत को स्वाधीनता प्राप्त होने से पूर्व तक आर्य समाज ने अपने महान संस्थापक के आदर्शों के अनुरूप कार्य किया।

लेकिन आज दुख इस बात का है कि आर्य समाज में भी वे सभी बुराईयां आ गई हैं जो सारे समाज में फैली हुई हैं। आर्य समाज भी आज गुटबन्दी, वैमनस्य, पदलिप्सा, अकर्मण्यता, मुकद्दमेबाजी का केन्द्र बना हुआ है। आर्य समाज के सैनिक मात्र लकीर के फकीर बन रहे हैं। आज जबकि सारा देश दानवता की अग्नि में जल रहा है, वैदिक धर्म, संस्कृति व सभ्यता दांव पर लगी हुई है, महर्षि दयानन्द के स्वपन विलुप्त हो गए हैं। जातिवाद, स्वार्थवाद, सत्तावाद का बोलबाला है, ऐसी भयानक परिस्थिति में महर्षि दयानन्द के सच्चे सैनिक सो रहे हैं। जिन परिस्थितियों के फलस्वरूप आर्य समाज की स्थापना की गई थी, वे परिस्थितियां आज हमें निगल जाने को आतुर हो रही हैं। मानवता का अस्तित्व समाप्त हो चुका है, सामाजिक दशा दयनीय हो चुकी है, सारे राष्ट्र में अव्यवस्था, अराजकता, घूसखोरी, अत्याचार, शोषण, उत्पीड़न, भ्रष्टाचार, अपहरण, डकैती तथा बलात्कार, कत्ल आदि का तांडव नर्तन हो रहा है। युवा वर्ग नशे की दलदल में धंसता जा रहा है जिसके परिणामस्वरूप देश में अपराधिक घटनाएं बढ़ रहीं हैं। मानवता को हिला देने वाली, शर्मसार करने वाली घटनाएं लगातार बढ रही हैं। विदेशी संस्कृति तथा सभ्यता हमारे नैतिक मूल्यों पर लगातार आक्रमण कर रही हैं। नक्सलवाद तथा आतंकवाद की आग में सारा देश झुलस रहा है। यदि आज आर्य समाज न चेता तो मानवता का क्या होगा? कुछ कहा नहीं जा सकता। इतिहास एवं समय आज की इस कठिन परिस्थिति में सच्चे आर्य समाज के अनुयायियों को पुकार रहा है तथा ललकार रहा है महर्षि दयानन्द द्वारा मानवता के अधूरे कार्य को पूरा करने के लिए। क्या हम आर्य समाज के सेवक और दयानन्द के सैनिक उस ललकार को सुनकर अपने कर्त्तव्य पथ पर डट सकेंगे? क्या हम वैदिक धर्म की ध्वजा महिमण्डल में लहराने का संकल्प ले सकेंगे? यदि हां तो आईए हम सब मिलकर प्रतिज्ञा करें कि हम महर्षि दयानन्द के पद चिन्हों पर चलते हुए, भेदभावों को भुलाकर देश में फैली सभी बुराईयों का एकजुट होकर सामना करें और देश को भ्रष्टाचार आदि बुराईयों से मुक्त करके उन्नत तथा खुशहाल बनाएं।

-प्रेम भारद्वाज
सभा महामंत्री एवं सम्पादक

दसवीं कक्षा का परीक्षा परिणाम

दिनांक 3-6-2013 को दसवीं कक्षा का परिणाम पंजाब बोर्ड द्वारा घोषित किया गया जिसमें आर्य सीनियर सैकंडरी स्कूल लुधियाना के 86 विद्यार्थियों में से 85 विद्यार्थी अच्छे अंक लेकर पास हुए हैं। हमारा रिजल्ट 97.70 प्रतिशत रहा है। इस अच्छे रिजल्ट की खुशी में आर्य स्कूल के प्रिंसीपल श्री विजयपाल दयौड़ा जी ने बच्चों की मेहनत को सराहा और शिक्षकों को बधाई का पात्र कहा। आर्य सीनियर सैकंडरी स्कूल के प्रधान श्री आसानंद जी आर्य उप-प्रधान श्री रमेश जोशी जी ने भी इस अच्छे परिणाम के लिए सभी अध्यापकों को बधाई दी। इस अवसर पर हमारे स्कूल के मैनेजर श्रीमती विनोद गांधी जी ने भी भविष्य में अच्छे परिणाम के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित किया और इस परिणाम के लिए सभी शिक्षकों को सराहा। और कहा स्कूल की बढ़ौत्तरी के लिए जो भी संभव कार्य होंगे वो किए जाएंगे। **-श्रीमती विनोद गांधी मैनेजर**

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत

-ले० श्री हरिश्चन्द्र वर्मा वैदिक मुरारई, वीरभूम

अभ्युत्थानम धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम॥ परित्राणाय साधुनां विनाशाय च दुष्कृताम। धर्म-संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे॥ 4, 7, 8

पौराणिक मतानुसार इसका अर्थ है-'हे भारत! जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब मैं अपने रूप को रचता हूं अर्थात् प्रकट होता है। क्योंकि साधु पुरुषों का उद्धार करने के लिए और दूषित कर्म करने वालों का नाश करने के लिए तथा धर्म स्थापन करने के लिए युग-युग में प्रकट होता है। अत: प्रस्तुत श्लोकों में श्री कृष्ण परोपकारार्थ अनेक जन्म लेने की कामना करते हैं।'

ऋषि दयानन्द की सम्मति में यह बात वेद विरुद्ध होने से प्रमाण नहीं और ऐसा हो सकता है कि श्री कृष्ण धर्मात्मा और धर्म की रक्षा करना चाहते थे कि मैं युग-युग में जन्म लेकर श्रेष्ठों की रक्षा और दुष्टों का नाश करूं तो कुछ दोष नहीं। क्योंकि ''परोपकार सतां विभूतय'' परोपकार के लिए सत्यपुरुषों का तन, मन, धन होता है। तथापि श्री कृष्ण ईश्वर नहीं हो सकते। (स. प्र. 7 समु.)

श्री कृष्ण ईश्वर नहीं थे क्योंकि वे जन्म मरण को प्राप्त हुए। ईश्वर अजन्मा है। यथा-'सपर्य्यागाच्छुक्रमकायम व्रण-मस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम। (यजु० 40, 8) वह ईश्वर सर्वव्यापक, जगदुत्पादक, शरीर रहित, शारीरिक विकार रहित, नाड़ी और नस के बन्धन से भी रहित है।

दशरथ पुत्र पुरुषोत्तम श्रीराम भी ईश्वर नहीं थे, क्योंकि ''समय जनि गुरु आयसु पाई सन्ध्या करन चले दोऊ भाई'' जब गुरु का आने का समय हो गया तो दोनों भाई सन्ध्या (अर्थात् ईश्वरोपासना) करने चले गए। श्री बाल्मीकि (रामायण) के अनुसार स्वयं राम ने कहा 'आत्मानं पुरुषं मन्ये रामं दशरथ आत्मज। यानि मैं दशरथ पुत्र एक राम पुरुष हूं।'

यहां श्रीराम और श्री कृष्ण का नाम उल्लेख करने का तात्पर्य है कि लोग कहते हैं कि जब रावण का अत्याचार बढ़ गया तब भगवान ने श्री राम के रूप में अवतार लेकर उसका वधकर ऋषि मुनियों की रक्षा की और जब महाभारत काल में कंस जैसे दानव निर्दयी और कौरव दल जब धर्मान्ध होकर अत्याचार करने लगे तब विष्णु भगवान श्री कृष्ण का अवतार लेकर उन सबका नाश कर, धर्म की स्थापना के लिए गीता का उपदेश अर्जुन को दिया।

किन्तु सन् 712 ई० से (सात सौ वर्ष) विदेशी मुसलमानों और 1700 ई० से (200) वर्ष अंग्रेज़ों ने राज्य किया। अंत में विदेशी शासन से मुक्त होने के लिए ऋषि महात्माओं की प्रेरणा से भारत में जागृति उत्पन्न होने लगी और पराधीनता की जंजीरों को तोड़ने के लिए स्वतंत्रता सेनानियों का गठन आरम्भ हो गया, और भारत छोड़ो आन्दोलन देश भर में फैल गया। उस समय अंग्रेज़ों ने बहुत अत्याचार किया। यहां तक कि जलियांवाला बाग में हजारों की संख्या में निहत्थे निरपराधियों को गोलियों से भून डाला। उस समय कितने देश भक्तों को फांसी पर लटका दिया। इतने नरसंहार के बाद भी स्वतन्त्रता संग्रामियों ने हार नहीं मानी। अन्ततोगत्वा जब अंग्रेज़ों ने देखा कि अब कोई उपाय नहीं है, तब लाचार होकर उन विदेशियों को भारत छोड़ना पड़ा, और सन् 1947 में यह स्वतन्त्र हो गया। स्वतन्त्र हो जाने के पश्चात् इसे आत्मनिर्भर होने में कई वर्ष लग गए। अब आज यह भारत सर्वशक्ति सम्पन्न है।

किन्तु आजादी के 66 वर्ष में भारत जहां एक तरफ विज्ञान और उत्पादन में 30 कदम आगे बढ़ा है, वहीं दूसरी तरफ चरित्र निर्माण में 30 कदम पीछे रह गया है। आज राष्ट्र स्वतन्त्र होकर भी अनेक प्रकार के दु:खों से पीड़ित है। सरकार की प्रशासन व्यवस्था की ढिलाई से देश में अत्याचार बढ़ने लगे हैं। बदमाश लोग राक्षस बन गए हैं। अश्लील सिने और शराब के नशे में छोटी-छोटी बच्चियों तक का बलात्कार करने लग गए हैं। (जो पशु भी ऐसा नहीं करते) देश में एक तरफ भ्रष्टाचार बढ़ा है तो दूसरी तरफ अपहरण एवं हत्याएं बढ़ रही हैं। ऐसा लगता है कि भारत में जागरुक सरकार है नहीं। यह सब पुलिस कर्मी एवं प्रशासन व्यवस्था में रिश्वत के लेन-देन के न होने से ढिलाई बरती जा रही है।

आज नारी सुरक्षित नहीं है। आज जितना अधर्म हो रहा है उतना न रावण काल में हुआ था न महाभारत काल में। उस काल में रावण ने तो एक सीता का अपहरण किया था और महाभारत काल में द्रोपदी का चीरहरण दु:शासन ने किया था, किन्तु आज तो कितने ही राक्षस स्वभाव के कितने ही नारी अपहरण एवं बलात्कार जैसे महापाप कर रहे हैं और कितने ही दु:शासन जैसे लोग नारियों का चीर-हरण कर रहे हैं।

देखिए रामायण में सुग्रीव के बड़े भाई बालि ने सुग्रीव की स्त्री छीन ली थी। तब मरते समय बालि ने पूछा कि ''मैं बैरी सुग्रीव पियारा, कारण कवन नाथ मोहि मारा ? तब श्रीराम ने उत्तर दिया कि-''अनुज वधू भगिनी सुत नारी, सुनु शठये कन्या सम चारी। इनही कुदृष्टि विलोकहि जोई ताहि बधै कछु पाप न होई॥ तो आज ऐसी परिस्थिति में पुन: ईश्वर क्यों नहीं अवतार लेता ? जहां कि हजारों गौवें भी ऋषि मुनियों, साधु सन्तों की तपो भूमि भारत के बूचड़ खाने में काटी जा रही है। आज धर्म के अन्धे लोग, मिथ्या विश्वास के कुसंस्कार वश जो देवी सबका हित करने वाली करुणामयी है के स्थान पर बकरे की बलि दी जा रही है। यह कुप्रथा वैदिक धर्म के विरुद्ध वाममर्गी एवं तन्त्रिकाओं ने चलाई है। अष्टांगयोग ध्यान धारण के स्थान पर प्रतिमाओं की पूजा हो रही है। लोग तिरुपति और साईं बाबा आदि की मूर्तियों पर लाखों करोड़ों के धन न्यौछावर कर रहे हैं। आज सच्चे धर्म से लोग विमुख होते जा रहे हैं। आज देश आतंकवादियों से संत्रस्त है। आज सारी दुनिया आणविक बमों के ढेर पर बैठी हुई है।''

जलवायु में प्रदूषण फैलता ही जा रहा है जिससे अनेक प्रकार के रासायनिक, वायुमण्डल के स्तरों में संचित होने से तापमान की वृद्धि के कारण, बर्फ का पिघलना, अतिवृष्टि, वज्रपात वृद्धि, अनावृष्टि तथा सुनामी, भूकंप आदि विपदा के कारण संसार सर्वनाश की ओर जाने लगा है, विज्ञान का आशीर्वाद अभिशाप में बदलने लगा है और जहां तक भ्रष्टाचारी, अहंकारी, शराबी, बलात्कारी, कसाई और दुष्ट प्रकृति के लोग हैं, उन्हें उनका दण्ड अवश्य मिलेगा, क्योंकि यदि बुरे कर्मों का फल इस संसार के न्यायालय में नहीं मिला तो ईश्वरीय नियम की तरफ से कभी न कभी अवश्य मिलेगा।

इस परमेश्वर की बनाई हुई सर्वोत्तम सुन्दर सृष्टि को जिन्होंने सर्वनाश करने के लिए आणविक बमों का निर्माण किया है और जिन रावण जैसा अत्याचारी और कंस जैसे पापियों द्वारा जो निरपराध नारी और पुरुषों के चरित्र का हनन एवं हत्याएं होती रहती हैं उन्हें मारने के लिए सर्वव्यापक परमात्मा का न कभी अवतार हुआ न हो सकता है। पर उनके द्वारा ऐसे धर्म रक्षक, ऐसे सदुपदेशक महात्मा अथवा राजा का आविर्भाव हो जाता है कि संसार में बढ़ रहे आतंक एवं अधर्मियों के उपद्रव को ये न्यून कर शान्ति ला सकते हैं।

राष्ट्रीय स्वाभिमान को जगाया आर्य समाज ने

-ले० डा. भवानीलाल भारतीय 3/5 शंकर कालोनी, श्रीगंगानगर

उन्नीसवीं शताब्दी ने भारत में नवजागरण के सूर्य को उदय होते देखा। राजा राम मोहनराय, देवेन्द्र नाथ ठाकुर, केशवचन्द्र सेन तथा गुजरात के दयानन्द सरस्वती ने यदि सामाजिक और धार्मिक सुधारों की अलख जगाई तो बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय ने आनन्द मठ जैसा प्रथम राजनैतिक उपन्यास लिखकर देशवासियों को वन्दे मातरम का राष्ट्रीय गीत दिया। पंजाब, संयुक्त प्रान्त, राजस्थान, बिहार, महाराष्ट्र में आर्य समाज के संस्थापक दयानन्द सरस्वती ने निरन्तर भ्रमण, वाणी एवं लेखन के द्वारा देशवासियों में राष्ट्रीय स्वाभिमान जगाया। पूर्वाग्रह युक्त इतिहासकारों ने इस नवीन जागृति को पश्चिम की देन कहा है और अंग्रेज़ी शिक्षा को राष्ट्रीय भावों का उद्भावक माना है। इसके विपरीत राम विलास शर्मा जैसे विद्वानों का मत है कि दयानन्द द्वारा प्रचारित राष्ट्रवाद शत-प्रतिशत भारत के गौरवपूर्ण अतीत से प्रेरणा लेता था।

अंग्रेज़ों द्वारा लिखे गए इतिहास ने इस भ्रान्ति को जन्म दिया कि पश्चिमी शक्तियों के आगमन से पहले इस उप महाद्वीप (वे भारत को एक देश न मान कर सब कान्टीनेंट कहते थे) के निवासी मूर्ख, अशिक्षित, अंध विश्वासों तथा जड़ रूढ़ियों की जकड़न में फंसे लोगों ने जिन्हें शिक्षा, संस्कार तथा उन्नति का मार्ग यूरोपियन जातियों और विशेषकर अंग्रेज़ों ने दिखाया। नव जागरण के प्रमुख सूत्रधार दयानन्द ने बताया कि भारत तो आरम्भ से ही विश्व मानवता को एकता, सत्य, अहिंसा आदि नैतिक मूल्यों का पाठ पढ़ाने वाला जगद् गुरु रहा है। उन्होंने भारत को स्वर्णभूमि कहा तथा मनु के एक श्लोक को उद्धृत कर यह प्रचारित किया कि विगत काल में अन्य देशों के जिज्ञासु छात्र भारत में आकर आचार एवं नैतिकता का पाठ सीखते थे।

सच पूछें तो दयानन्द ने आर्य समाज के स्थापना वर्ष 1875 में अपना प्रमुख ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश लिखा और उसमें सुराज्य की तुलना में स्वराज्य का महिमा मण्डन किया। उनकी मान्यता थी कि विदेशी राज्य चाहे कितना ही मतनिरपेक्ष (सैकुलर) होने की घोषणा करे वह माता-पिता की भांति अपनी शासित प्रजा के प्रति स्नेह व्यवहार क्यों न बनाए तथा न्याय युक्त शासन का दम्भ करे, स्वराज्य (अपना शासन) की तुलना में कभी वरीय नहीं हो सकता है और न ग्राहय। उनका यह कथन सम्भवत: महारानी विक्टोरिया के 1858 में प्रसारित उस घोषणा को ध्यान में रखकर कहा गया था जिसमें 1857 की गतिविधियों की पृष्ठभूमि में रानी ने भारत को भविष्य में सुशासन देने का वायदा किया था। दयानन्द की यह सदिच्छा केवल वाणी विलास ही नहीं था। उनके अनुयायियों ने उसे क्रियान्वित किया। दयानन्द स्वयं स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग तथा आर्थिक स्वावलम्बन के लिए स्वदेशी कला कौशल को अपनाने के पक्षपाती थे।

स्वामी दयानन्द को देशवासियों की गरीबी का भरपूर अहसास था। जब विदेशी शासन ने नमक जैसी जनोपयोगी वस्तु के उत्पादन पर प्रतिबन्ध लगाकर नमक का कारोबार अपने हाथ में ले लिया। (राजस्थान में सांभर, डीडबाना तथा पचपद्रा आदि नामक उत्पादन के संस्थानों पर सीधे ब्रिटिश हुकूमत का अधिकार था) तो दयानन्द ने अपने ग्रन्थ में इस तानाशाही कदम की निंदा की और इसे जनविरोधी बताया। आज के नक्सलवादियों का सरकार पर आरोप है कि जंगलों में उत्पन्न साधनों का प्रयोग जनजातियों के लोगों को करने नहीं दिया जाता और यह अशान्ति का कारण बनता है। दयानन्द भी इस शिकायत से शत-प्रतिशत सहमत थे। वे मानते थे कि वनों में उत्पन्न वन सम्पदा, लकड़ी आदि पर ग्रामीण जनता का अधिकार है। वे अदालतों में उन कानूनों को आपत्तिजनक मानते थे जिनसे न्याय की प्रक्रिया अवरुद्ध होती है। रजिस्ट्री कराने पर भारी रकम चुकाना, स्टैम्प ड्यूटी में बढ़ौत्तरी आदि जनविरोधी अदालती आदेशों की उन्होंने खुलकर खिलाफत की थी।

महात्मा गांधी ने तो स्वदेशी वस्तुओं, विशेषत घर की बनी खादी के प्रयोग पर बहुत बाद में बल दिया, किन्तु हम देखते हैं कि स्वामी दयानन्द की शिक्षाओं से प्रभावित पंजाब के शिक्षित वर्ग ने आर्य समाज में आकर स्वदेशी वस्त्र धारण को अंगीकार किया। 19वीं शताब्दी के अन्तिम दशक में हम देखते हैं कि वयोवृद्ध आर्य लाला साईंदास, पैन्शनर जीवनदास, युवा अधिकारी लाला मूलराज, युवा वकील लाला लाजपत राय आदि शतश: लोगों ने स्वदेशी वस्त्रों को स्वयं अपनाया तथा इसका प्रचार किया। दयानन्द ने तो जर्मनी के एक शिक्षा विशेषज्ञ बीज से पत्राचार कर यह योजना बनाई थी कि वे शीघ्र ही भारत के युवकों को पश्चिमी कला-कौशल, विज्ञान तथा उद्योग व्यवसाय की शिक्षा देने के लिए जर्मनी भेजेंगे।

गांधी जी की भांति दयानन्द ने भी गोरक्षा तथा हिन्दी के प्रचार को राष्ट्रीय भावना को बढ़ाने में उपयोगी माना था। गौ रक्षा के आर्थिक पहलू पर जोर देकर उन्होंने गौ वध की हानियों का विस्तार से विवेचन अपने ग्रन्थ गोकरुणानिधि में किया। वे शिक्षा में मातृभाषा तथा राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रयोग के प्रबल पक्षपाती थे। विद्यालयों में हिन्दी शिक्षा का आह्वान करने हेतु उन्होंने शिक्षा कमीशन के अध्यक्ष मि. हैमिल्टन को पत्र भेजे। आर्य समाज की राष्ट्रीय भावना समयान्तर में उस समय प्रत्यक्ष हुई जब कांग्रेस ने आजादी की लड़ाई लडी तथा उसमें आर्य समाज के अनुयायियों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। स्वामी दयानन्द साम्प्रदायिक सौहार्द के कट्टर समर्थक थे। उनकी मित्र मंडली में सर सैयद अहमद खां जैसे मुस्लिम सुधारक, राजस्थान के पत्रकार मौलवी मोहम्मद मुराद अली तथा बरेली के पादरी डॉ० स्काट जैसे लोगों की पहचान हुई है। वे धार्मिक मामलों में सहनशीलता के पक्षपाती थे तथा मजहबी मसलों को बौद्धिक स्तर पर सुधारने या निपटाने के पक्षधर थे। उन्होंने राजाओं से लेकर निम्न वर्ग तक को राष्ट्रहित के लिए प्रेरित किया। उनके राष्ट्रवाद का ही परिणाम था कि क्रान्तिकारी राम प्रसाद बिस्मिल तथा अशफाकुल्ला खां जैसे देशभक्तों ने स्वदेश के लिए फांसी का फंदा चूमा।

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा एवं गुरुकुल आश्रम आमसेना की ओर से आर्य युवक चरित्र निर्माण (आर्यवीर दल) के शिविरों की श्रृंखला

आप सबको यह जानकर हर्ष होगा कि गुरुकुल आश्रम आमसेना एवं उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से मानव जीवन के आधार युवकों के निर्माण में लगा हुआ है। गत वर्षों की तरह इस वर्ष भी आर्यवीर दल के निम्न शिविर लगाये जा रहे है।

1. प्रथम शिविर नवापारा जिले के अभयारण्य कन्या छात्रावास सोनाबेड़ा में 3 से 7 अप्रैल तक सम्पन्न हुआ इस शिविर में लगभग 50 युवकों ने भाग लिया।

2. झारखण्ड के शान्ति आश्रम लोहरदगा में 17 से 22 मई तक आर्यवीर दल का यह शिविर सम्पन्न हुआ इस शिविर में 100 से अधिक युवकों ने भाग लिया। इस शिविर का संचालन आचार्य शरच्चन्द्र जी शास्त्री ने किया।

3. आचार्य वीरेन्द्र कुमार जी, आचार्य मंजीत जी शास्त्री एवं चौधरी राजेन्द्र जी हुमायुपुर के प्रयास से हरियाणा दिल्ली के लगभग 40 युवकों ने गुरुकुल आश्रम आमसेना में 16 से 23 मई तक आकर चरित्र निर्माण की शिक्षा प्राप्त की। उत्तर भारत के युवकों का उड़ीसा में आकर प्रशिक्षण प्राप्त करना एक नया प्रयास था, जो सफल रहा। इस शिविर का उद्घाटन श्री राजेन्द्र जी धनखड़ (गेवरा) ने किया

4. परममित्र मानव निर्माण आर्ष विद्यापीठ गेरवानी (रायगढ़) में 21 मई से 26 मई तक आर्य वीरों का यह शिविर आचार्य सुभाषचन्द्र जी के सानिध्य में सम्पन्न हुआ। इस शिविर में 80 से अधिक युवकों ने भाग लेकर अपना जीवन पवित्र रखने का संकल्प लिया।

5. कन्धमाल जिले में स्वामी ओमानन्द वैदिक छात्रावास नुआंगा में 1 से 6 जून तक इस आर्यवीर दल का आयोजन होगा इस शिविर में भी सैकड़ों युवकों के भाग लेने की आशा है। इस शिविर में भी भाग लेने वालों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है। इस शिविर का संचालन पं. विशिकेशन जी शास्त्री एवं ब्र. श्रद्धानन्द जी करेंगे। इन सब शिविरों का संचालन मार्ग दर्शन एवं व्यवस्था पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती के द्वारा होती है। गुरुकुल के आचार्य व्रतानन्द जी का भी पूर्ण आशीर्वाद मिलता है। इन शिविरों की सारी आर्थिक व्यवस्था भी गुरुकुल आश्रम आमसेना की ओर से की जाती है।

-डॉ. कुञ्जदेव मनीषी

पृष्ठ 1 का शेष- ऋग्वेद में.....

अर्थ-हे मनुष्यों। जो (अभिशस्ति चातनः) सब ओर से हिंसा की विचालना करता (दमूनाः) और दमनशील (साधदिष्टिभिः) अच्छे प्रकार से सिद्ध की हुई इच्छाओं के साथ (जीरः) वेगवान् (रथीः) जिसके बहुत रथ विद्यमान (जन्तुभिः) मनुष्यों के साथ (मनुष्यः) मनुष्यों को (तन्वानः) विस्तार अर्थात उनको वृद्धि देता हुआ और (देवेभिः) दिव्य गुणों के साथ (अग्निः) अग्नि (ईयते) जाता है तथा (धिया) कर्म से (पुरूपेशसम्) बहुत रूपों वाले (यज्ञम्) प्राप्त संसार को सिद्ध करता है। उसको जानो।

भावार्थः-इस मंन्त्र में वाचकलुप्तोपमालंकार है। मनुष्यो को जो अग्नि सामान्य रूप से सब पदार्थों को पुष्ट अग्नि विद्या (ताप) का जानना प्रत्येक व्यक्ति के लिए लाभदायक है।

अस्तिदमधिमन्थनमस्ति प्रजननं कृतम्।
एतां विश्पत्नीमा भराग्नि मन्था पुर्वथा। ऋ . 3.29.1

अर्थ-हे विद्वान पुरूष। जो (इदम्) यह (अग्निमन्थनम्) ऊपर के भाग में वर्तमान मथने का वस्तु (अस्तु) विद्यमान है और जो (प्रजननम्) प्रकट होना (कृतम्) क्रिया (अस्ति) है और जो उन दोनों से (एताम्) इस (विश्पत्नीम्) प्रजाजनों के पालन करने वाली को हम लोग (पूर्वथा) प्राचीन जनों के तुल्ओ (अग्निम्) विद्युत को (मन्थाम्) मन्थन करे और (आभर) सब और से आप लोग ग्रहण करो।

भावार्थ-जो मनुष्य ऊपर और नीचे के भाग में स्थित मथने की वस्तुओं के द्वारा घिसने से बिजली रूप अग्नि को उत्पन्न करे, वे प्रजाओं के पालन करने वाले सामर्थ्य को प्राप्त होते हैं और जैसे पूर्व काल के कारीगरों ने शिल्प क्रिया से अग्नि आदि सम्बन्धिनी विद्या की सिद्धि की हो उस ही प्रकार से सम्पूर्ण जन इस अग्नि विद्या को ग्रहण करे। भाप के द्वारा चलने वाले वाहनों का वेद में वर्णन है।

उत्तानायामव भरा चिकित्वान्सद्यः प्रवीता वृषणं जजान।
अरूषस्तूपो रूशदस्य पाज इडायास्पुत्रो वयुनेअजनिष्ठः॥
ऋ . 3.29.3

अर्थ-हे विद्वान् पुरूष। (चिकित्वान्) बुद्धिमान्। आप (उत्तानायाम्) सीधेपन से सोते हुए मनुष्य के तुल्य वर्तमान भूमि में जो (प्रवीता) बहुत व्याप्त बिजली (वृषणम्) वृष्टि कर्त्ता सूर्य को (जजान) उत्पन्न करती है उसको (अवभरः) धारण करो और जो (अरूषस्तूपः) मर्मस्थलों में क्लेश दायको में प्रशंसा मुक्त (अस्य) इस संसार के (पाजः) बल के (रूशत्) नाशकारक (इडायाः) वाणी के (पुत्रः) पुत्र के सदृश स्थित (वयुने) विज्ञान में (अजनिष्ठ) उत्पन्न होता है उसको (सद्यः) शीघ्र धारण करो।

भावार्थः-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालंकार हैं वे अपना बल बढ़ाकर विज्ञान को उत्पन्न करते है और जब नीचे के भाग में अग्नि ऊपर जल स्थित करके वायु से प्रज्वलित करते हैं तब अग्नि और जल द्वारा बहुत से कार्य सिद्ध कर सकते हैं।

अगले मंत्र में कहा गया है कि जो लोग वाहन चलाने के लिए अग्नि को धारण करते हैं वे धनयुक्त होते हैं।

आगे ऋ . 29.9 के भावार्थ में स्वामी दयानन्द सरस्वती लिखते हैं-हे विद्वानो। काष्ठ अग्नि और जल के संयोग से उत्पन्न हुए भाप से अपने कार्यों को परस्पर मित्र भाव से सिद्ध करो। जैसे धर्म पूर्वक वर्ताव रखने वाले विद्यायुक्त शूरवीर पुरूष दुष्ट कर्मकारियों का नाश करके राजी होते है वैसे ही यह अग्नि उत्तम प्रकार यन्त्र आदि से युक्त किया गया दारिद्रय आदि का नाश करके अनगिनत धन को उत्पन्न करता है।

वेद के अनुसार अग्नि के तीन स्थान है एक ऊपर आकाश में (सूर्य) दूसरा पृथ्वी में तथा तीसरा विद्युत रूप आकाश में स्थित बिजली।

दिव्य न्यः सदनं चक्र उच्चा पृथिव्यामन्यो अध्यन्तरिक्षे।
तावस्मभ्यंनि पुरूवारं पुरूक्षुंरायस्पोषं विष्यतां नाभिमस्में।
ऋ . 2.40.4

अर्थ-हे मनुष्यो। अग्नि का भाग (अन्यः) और है वह (उच्चा) ऊपर जो स्थित (दिवि) आकाश उसमें (सदनम्) स्थान (अधि, चक्रे) किए हुए है। तथा (अन्यः) और (पृथिव्याम्) पृथ्वी में और (अन्तरिक्षे) अन्तरिक्ष में स्थान को (अधि) अधिकता से किए हुए है (तौ) वे दोनों (अस्मभ्यं) हम लोगों के लिए (पुरूवारम्) बहुतों से स्वीकार करने योग्य (पुरूक्षुम्) बहुतों ने शब्दित किये अर्थात् कहे सुने (रायः) धनादि पदार्थों के (पोषम्) पुष्ट करने वाली और (अस्मे) हमारे (नाभिम्) मध्य बन्धन के (विष्यताम्) निकट हो उनको तुम जानो।

शिल्प विद्या में अग्नि का महत्वपूर्ण स्थान है। अग्नि में डालने से सुगन्धित वस्तुएँ सूक्ष्म होकर वायुमण्डल में फैलकर सुगन्ध फैला देती है। इसी प्रकार रोग फैलाने वाले कीटाणुओं को भी कीटाणुनाशक औषधियों डालने से वे भी सूक्ष्म होकर रोगाणुओं को नष्ट कर देती है। विमानादि यानो में भी विद्युत का लाभ लिया जाता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ऋग्वेद मण्डल। सूक्त 12 मंत्र 1 के भावार्थ में लिखतें है, ईश्वर सब मनुष्यों को आज्ञा देता है कि यह प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष से विद्वानो नें जिसके गुण प्रसिद्ध किए हैं तथा पदार्थों को ऊपर नीचे पहुंचाने से दूत स्वभाव तथा शिल्प विद्या से जो कलायन्त्र चलाते है, उनके चलाने में हेतु और विमान आदि यानों में वेग आदि क्रियाओं का देने वाला भौतिक अग्नि अच्छी प्रकार विद्या से सब सज्जनों के उपकार के लिए निरन्तर ग्रहण करना चाहिए जिससे सब उत्तम सुख प्राप्त हो।

फिर इसी सूक्त के चौथे मन्त्र के भावार्थ में वे लिखते हैं-हे मनुष्यो। यह अग्नि तुम्हारा दूत है क्योंकि हवन किये गए परमाणु रूप पदार्थों को अन्तरिक्ष में पहँचाता उत्तम-उत्तम भोगों की प्राप्ति का हेतु है। इस से सब मनुष्यों को अग्नि के जो प्रसिद्ध गुण है उनका संसार में अपने कार्यों की सिद्धि के लिए अवश्य प्रकाशित करना चाहिए। ठीक प्रकार से कार्य में नियोजित अग्नि मनुष्य को प्रसन्नता देता है।

नाराशंसमिह प्रियमस्मिन् यज्ञ उपह्वते।
मधुजिह्वं हविष्कृतम्। ऋ . 1.13.3

अर्थ-मैं (अस्मिन्) इस (यज्ञे) अनुष्ठान करने योग्य यज्ञ तथा (इह) संसार में (हविष्कृतम्) जो कि हवन करने योग्य पदार्थों से प्रदीप्त किया जाता है और (मधुजिह्वम्) जिसकी काली, कराली, मनोजवा, सुलोहिता, सुधूम्रवर्णा, स्फुल्लिङ्गिनी और विश्वरूपी में अति प्रकाशमान चपल ज्वालारूपी जीभें है (प्रियम्) ये सब जीवों को प्रीति देने वाली और (नराशंसम्) जिस सुख की मनुष्य प्रशंसा करते है, उसके प्रकार करने वाले अग्नि को (उपह्वाये) समीप प्रज्वलित करता हूँ।

अग्ने सुखतमें रथे देवॉ इडित आ वह।
असि होता मनुर्हितः। ऋ . 1.13.4

अर्थ-जो (अग्ने) भौतिक अग्नि (मनुः) विद्वान् लोग जिसको मानते हैं तथा (होता) सब सुखों का देने और (इडितः) मनुष्यों को स्तुति करने योग्य (असि) है। वह (सुखतमे) अत्यन्त सुख देने तथा (रथे) विमानादि वाहनों में (हित) स्थापित किया हुआ (देवान्) दिव्य भोगों को (आ वह) अच्छे प्रकार देशान्तर में प्राप्त करता है। इति।

गीता का शंखनाद

-ले० पं. वेदप्रकाश शास्त्री, शास्त्री भवन, 4-E कैलाशनगर, फाजिलका

भारतीय संस्कृति में 'शंख' का अत्यधिक महत्व है। पौराणिक मंदिरों में तो शंखध्वनि प्रतिदिन गुञ्जायमान होती है। विभिन्न पुण्य अवसरों पर भी शंखनाद किया जाता है। विवाह आदि शुभकार्यों में संकल्प के समय भी शंख प्रयुक्त होता है। परन्तु यह तो पूजापाठ, आरती सदृश शुभावसर हेतु है।

प्राचीन काल में युद्ध की स्थिति में भी शंखनाद किया जाता था। इससे वीर योद्धाओं में अपूर्व उत्साह भर जाता था। जब पक्ष और विपक्ष की ओर से शंखनाद होता था तो युद्धक्षेत्र में किसी को और कुछ नहीं सुनाई देता था।

शंखध्वनि करने का मुख्य उद्देश्य था-वीरों के मन को बाह्य वृत्तियों से मोड़ कर युद्ध हेतु आकृष्ट करना और वातावरण को युद्धमय बना देना। सैनिक घर-परिवार सम्बन्धी कार्य, उत्तरदायित्व, पत्नी-बच्चों के प्रति आसक्ति, चिन्ता आदि को भूलकर युद्धोन्मुख हो जाते थे। फिर उन्हें और कुछ नहीं सूझता था और न ही घर का ध्यान रहता था।

शंख के अतिरिक्त अन्य वाद्ययन्त्रों का भी प्रयोग होता था जो वीरों में नई उमंग, नया जोश भरने में सहायक होते थे। परन्तु प्रमुखता शंख की ही थी।

आइए, गीता का शंखनाद सुनें-

कौरव और पाण्डव दोनों पक्षों के योद्धा कुरुक्षेत्र के मैदान में आमने-सामने उपस्थित हैं, युद्धार्थ व्यूह-रचना भी कर ली है, युद्ध-विशारद हैं, शत्रुओं का विनाश करने में समर्थ हैं, युद्धारम्भ होने की प्रतीक्षा है, बस आदेश मिलने की देर है। इसी ऊहापोह में कौरव पक्ष की ओर से भीष्म पितामह ने सिंहगर्जना के साथ अपना शंख बजा दिया-

तस्य संजनयन्हर्षं कुरुवृद्धः पितामहः।
सिंहनादं विनद्योच्चैः शंखं दध्मौ प्रतापवान्॥ 1/12

कौरवों में वृद्ध बड़े प्रतापी पितामह भीष्म ने उस दुर्योधन के हृदय में हर्ष उत्पन्न करते हुए उच्च स्वर से सिंहनाद के समान गर्ज कर शंख बजाया।

बस फिर क्या था। रणभैरी बजने की देर थी-

ततः शंखाश्च भेर्यश्च पणवानकगोमुखाः।
सहसैवाभ्यहन्यन्त स शब्दस्तुमुलोऽभवत्॥ 1/13

तत्पश्चात् शंख और नगाड़े तथा ढोल, मृदंग और नृसिंहादि बाजे एक साथ ही बजे। उनका वह शब्द बड़ा भयंकर हुआ।

जब इस प्रकार कौरव पक्ष की ओर से युद्ध-नाद हुआ तो पाण्डव पक्ष भी पीछे न रहा और उसने भी शंखनाद करके युद्धार्थ सनद्ध होने का संकेत दिया-

ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते महति स्यन्दने स्थितौ।
माधवः पाण्डवश्चैव दिव्यौ शंखौ प्रदध्मतुः॥ 1/14

तत्पश्चात् सफेद घोड़ों से युक्त उत्तम रथ में बैठे हुए श्री कृष्ण महाराज और अर्जुन ने भी अलौकिक शंख बजाए।

पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनञ्जय :।
पौण्ड्रं दध्मौ महाशंखं भीमकर्मा वृकोदर :॥ 1/15

श्री कृष्ण महाराज ने 'पाञ्चजन्य' नामक शंख, अर्जुन ने 'देवदत्त' नामक शंख बजाया। भयानक कर्मा वाले भीमसेन ने 'पौण्ड्र' नामक महाशंख बजाया।

इससे यह भी विदित होता है कि इन महारथियों के शंखों के नाम भी गुणवत्ता के आधार पर अलग-अलग होते थे। और भी देखिए-

अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिर :।
नकुलः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्पकौ॥ 1/16

कुन्तीपुत्र राजा युधिष्ठिर ने 'अनन्तविजय' नामक और नकुल तथा सहदेव ने सुघोष और 'मणिपुष्पक' नाम वाले शंख बजाए।

काश्यश्च परमेष्वासः शिखण्डी च महारथ :।
धृष्टद्युम्नो विराटश्च सात्यकिश्चापराजित :॥ 1/17

समाज सेवा में बढ़ता हुआ एक और कदम
॥ निःशुल्क औषधालय॥

आर्य समाज फिरोजपुर छावनी में निःशुल्क औषधालय का विधिवत शुभारम्भ किया गया। सर्वप्रथम अथर्ववेद की पवित्र ऋचाओं से आचार्य देवराज ने यज्ञ सम्पन्न कराया। आचार्य जी ने कहा यज्ञ स्वयं एक सम्पूर्ण औषधालय है। यज्ञ चिकित्सा का वेद में विशेष रूप से वर्णन है। मुख्य यज्ञमान डॉ० प्रोमिला मारकन रहे। इस औषधालय में एलोपैथिक, होमोपैथिक, नैचरोपैथिक तीनों प्रकार की चिकित्सा का प्रबन्ध होगा। शुभारम्भ कार्यक्रम में सर्वश्री विजय आनन्द राजेन्द्र पाल सोनी, चावला परिवार, वर्मा परिवार, आनन्द परिवार फिरोजपुर शहर के प्रमुख आर्य परिवार विशेष रूप से समाज में पधारे।

प्रधान श्री विजय आनन्द जी ने पधारे हुए सभी आर्यजनों का धन्यवाद करते हुए कहा सभी इस औषधालय का लाभ उठाएं। यह समाज यज्ञ योग वेद व सत्य सनातन वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में सदैव तत्पर रहेगी। अन्त में शान्ति पाठ के बाद प्रसाद वितरण किया गया।

-मनोज आर्य महामंत्री

आर्य समाज भोगल (जंगपुरा) नई दिल्ली का निर्वाचन सम्पन्न

आर्य समाज भोगल (जंगपुरा) नई दिल्ली का साधारण अधिवेशन और निर्वाचन 19 मई 2013 को समाज हॉल में आर्य समाज भोगल के आर्य महानुभावों और महिलाओं की उपस्थिति में हर्षोल्लास के वातावरण में सम्पन्न हुआ। जिसमें प्रसिद्ध दंत चिकित्सक एवं समाजसेवी डॉ० जे. पी. गुप्ता जी का प्रधान पद के लिए सर्वसम्मति से चुनाव किया गया। ज्ञातव्य है डॉ० गुप्ता जी का इस आर्य समाज से वर्षों पुराना सम्बन्ध रहा है। इसके पूर्व आप कई बार प्रधान और अन्य महत्त्वपूर्ण पद संभालते हुए समाज के उत्थान और वेदों के प्रचार-प्रसार के लिए कार्य करते रहे हैं। डॉ० साहब के प्रधान चुने जाने पर क्षेत्र के सक्रिय आर्य बुद्धिजीवियों ने हर्ष व्यक्त करते हुए आशा व्यक्त की है कि आने वाले समय में आर्य समाज भोगल नए रूप में समाज सुधार और वेदों के प्रचार-प्रसार के कार्य में अग्रसित होगा। चुनाव अधिकारी श्री राजेश्वर गुप्ता (अधिवक्ता) के अनुसार डॉ० गुप्ता के साथ अन्य जिन पदों के लिए आर्य महानुभावों का चुनाव हुआ उनका पद और नाम निम्नलिखित है।

प्रधान : डॉ० जे. पी. गुप्ता, उप-प्रधान : डॉ० आभा विरमानी एवं श्री अनिल नागपाल, महामन्त्री : श्री अविनाश चन्द्र धीर, कोषाध्यक्ष : श्री श्रवण कुमार वलेचा।

-अविनाश चन्द्रधीर महामन्त्री

द्रुपदो द्रौपदेयाश्च सर्वश : पृथिवीपते।
सौभद्रश्च महाबाहुः शंखान् दध्मु : पृथकपृथक्॥ 1/18

श्रेष्ठ धनुषवाला काशिराज और महारथी शिखण्डी और धृष्टद्युम्न तथा राजा विराट और अजेय सात्यकि, राजा द्रुपद और द्रौपदी के पांचों पुत्र और बड़ी भुजाओं वाला सुभद्रापुत्र अभिमन्यु इन सबने हे राजन! अलग-अलग शंख बजाए।

स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत्।
नभश्यच पृथिवीं चैव तुमुलो व्यनुनादयन्॥ 1/19

और उस भयानक शब्द ने आकाश और पृथिवी को भी शब्दायमान करते हुए धृतराष्ट्र-पुत्रों के हृदय विदीर्ण कर दिये।

यहां पर कुछ महान् योद्धाओं के ही शंखों के नामों का उल्लेख किया गया है। जिससे यह पूर्णतः स्पष्ट हो जाता है कि सभी महारथियों ने अपने-अने शंखों के नामकरण किए हुए थे। जब सभी मिलकर बजाते थे तो उनसे बहुत ही भयंकर ध्वनि निकलती थी जो उनकी महाशक्ति की प्रतीक थी।

वेद वाणी

यस्मान्न ऋते विजयन्ते जनासो, यं युध्यमाना अवसे हवन्ते।
यो विश्वस्य प्रतिमानं बभूव, यो अच्युतच्युत् स जनास इन्द्रः॥
-ऋ० २/१२/९; अथर्व० २०/३४/९

विनय-लोग 'ईश्वर'-'ईश्वर' नाम लिया करते हैं, परन्तु हे मनुष्यो ! क्या तुम उसे अनुभव करते हो ? बेशक, वह इन्द्रियों से परे होने के कारण आँख आदि से ग्रहण नहीं किया जा सकता, तो भी हरेक मनुष्य उसे अनुभव कर सकता है। इस संसार में जो कुछ मनुष्य को विजय मिलती है वह सब उसी से मिलती है। उसकी अनुकूलता के बिना बड़े से बड़े बली अभिमानी को विजय नहीं मिल सकती। सब विजय उसी की है। अतः जहाँ हरेक विजय में हम उसकी महत्ता को अनुभव करें, वहाँ अपनी हरेक हार में भी उसकी महत्ता को देखें जिसकी कि स्वीकृति न होने के कारण ही हमें हरेक हार मिलती है। इस युद्धमय संसार में मनुष्य जब अपनी सब प्रकार की शक्ति से निराश हो जाता है और हारता हुआ अपने को बिल्कुल बेबस जानकर जिस एक अज्ञात और अपने से ऊँची शक्ति को पुकारने लगता है वही शक्ति परमेश्वर है। नास्तिक पुरुष के हृदय में भी उस चरम निःसहायता की अवस्था में किसी अन्य शक्ति से सहायता पाने की छिपी हुई आशा प्रकट हो जाती है। उस शक्ति को क्या नहीं देखते ? अपनी इस चरम निस्सहाय दशा में हारकर, बेबस होकर उस परमेश्वर-शक्ति को अनुभव करो जिसके बिना संसार में कोई भी विजय नहीं मिलती। देखो, यह वो है जिसे कि रक्षा पाने के लिए युद्धों में सब मनुष्य पुकार रहे हैं। और यदि चाहो तो संसार की एक-एक वस्तु में उसे अनुभव करो। यह सब विश्व उसी को दिखा रहा है। यह संसार और किसमें रखा हुआ है ? इस विश्व को किसने धारा हुआ है ? यह ही वो है जो कि इस सब संसार का आधार, सार और आत्मा है और ऐसा होकर भी जो संसार की हरेक वस्तु में ऐसा तद्रुप (ऐसा तत्प्रतिम) हो बैठा है कि मनुष्य संसार की वस्तुओं को देखते हैं पर उसे नहीं देखते। पर यह न दीखने वाला ही सब-कुछ है। इस संसार में जो असंभव संभव हो रहे हैं, जिनके कभी मिटने की संभावना नहीं होती वे क्षण-भर में मिट जाते हैं, ये सब काम वही न दीखनेवाला कर रहा है। जिन्हें यह दुनिया अडिग समझती है वह उन्हें भी चुपके से गिरा देता है। उस 'अच्युतच्युत्' को देखो ! संसार की एक-एक चीज़ में रमे हुए उसे देखो ! वह विश्वमय होकर हमारे सामने खड़ा है; उसे क्यों नहीं देखते ? हे मनुष्यो! उसे देखो, वही इन्द्र है, वही परमेश्वर है।

-साभार वैदिक विनय, प्रस्तुतिः रणजीत आर्य

आर्य समाज धारीवाल का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी आर्य समाज धारीवाल का वार्षिक उत्सव के रूप में विश्व शान्ति एवं सद्भावना के लिए गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। 29.5.13 से 1.6.2013 तक प्रातः 6.30 से 8 बजे तक पवित्र गायत्री महायज्ञ होता रहा। इसके पश्चात् आर्य प्रतिनिधि सभा जालन्धर (पंजाब) के महोपदेशक आचार्य नारायण सिंह जी के प्रभावशाली प्रवचन एवं भजनोपदेशक पंडित सतीश सुमन, सुभाष राही जी के बहुत ही शिक्षाप्रद भजन होते रहे। इसी प्रकार रात्रि के भी 8.30 बजे से 10.30 बजे प्रवचन एवं भजन होते रहे।

2.6.2013 रविवार को गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति डाली गई। जिसमें सैंकड़ों नर-नारियों ने पूर्णाहुति डालकर पुण्य के भागी बने। यज्ञ के ब्रह्मा पद को शास्त्री जोगेन्द्र पाल जी ने सुशोभित किया। 10.30 से 2 बजे तक विशेष कार्यक्रम चलता रहा जिसकी अध्यक्षता स्वामी सदानन्द जी ने की। सारे ज़िले की आर्य समाजों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। अन्त में शान्ति पाठ के साथ, ऋषि के जयघोषों से आर्य समाज धारीवाल का वार्षिक उत्सव बड़ी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। शहरवासियों के सहयोग से ऋषि लंगर का भी आयोजन किया गया। -जोगेन्द्र पाल मन्त्री

गुरूकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

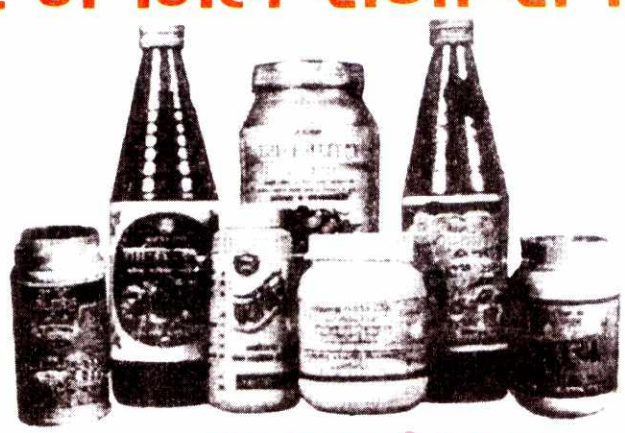

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।